भगत नामदेव – सबद ३७

चारि मुकति चारै सिधि मिलि कै दूलह प्रभ की सरनि परिओ ॥

रागु मारू, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ११०५

चारि मुकति चारै सिधि मिलि कै दूलह प्रभ की सरनि परिओ ॥
मुकति भइओ चउहूँ जुग जानिओ जसु कीरति माथै छत्रु धरिओ ॥१॥
राजा राम जपत को को न तरिओ ॥
गुर उपदेसि साध की संगति भगतु भगतु ता को नामु परिओ ॥१॥ रहाउ ॥
संख चक्र माला तिलकु बिराजित देखि प्रतापु जमु डरिओ ॥
निरभउ भए राम बल गरजित जनम मरन संताप हिरिओ ॥२॥
अंबरीक कउ दीओ अभै पदु राजु भभीखन अधिक करिओ ॥
नउ निधि ठाकुरि दई सुदामै ध्रूअ अटलु अजहू न टरिओ ॥३॥
भगत हेति मारिओ हरनाखसु नरसिंघ रूप होइ देह धरिओ ॥
नामा कहै भगति बसि केसव अजहूँ बलि के दुआर खरो ॥४॥१॥

सार: आध्यात्मिक निष्ठा या भक्ति, आंतरिक यात्रा के रूप में शुरू होती है जब सच्चाई की खोज दिखावे और विरासत में मिली पहचानों से आगे निकल जाती है। चिंतन और विनम्रता से जब जागरूकता आती है तब मन धीरे-धीरे अहं और स्वयं पर केंद्रित इरादों से अपना लगाव कम करने लगता है। जब यह लगाव कम होता है तो अंतरात्मा उस एकता को पहचानने लगती है जो सर्व-जीवन को जोड़ती है। इस समझ से करुणा, सच्चाई और सोच-समझकर किए गए काम स्वाभाविक रूप से पैदा होते हैं। साधक इस बदलाव को जीता है और वह केवल भक्ति करने वाला नहीं बल्कि आंतरिक सच्चाई का जीता-जागता उदाहरण बन जाता है। ऐसी जीवन-दृष्टि में आध्यात्मिकता संपूर्ण अस्तित्व के साथ सामंजस्य के रूप में प्रकट होती है।

चारि मुकति चारै सिधि मिलि कै दूलह प्रभ की सरनि परिओ ॥
मुक्ति की चार अवस्थाएँ और चार चमत्कारिक शक्तियाँ, उस प्रिय और सर्वव्यापी सत्य के धाम में एक साथ आ मिली हैं। इससे पता चलता है कि जब मन सर्वव्यापी चेतना से जुड़ता है, तब असाधारण उपलब्धियाँ और प्राप्तियाँ भी दूसरे दर्जे पर चली जाती हैं।

मुकति भइओ चउहूँ जुग जानिओ जसु कीरति माथै छत्रु धरिओ ॥१॥
जब मुक्ति मिलती है तब चारों युगों का सार समझ में आता है और सिर पर शाही छत्र के योग्य सम्मान प्राप्त होता है। यह ऐसे संकल्प को दर्शाता है जो बाहरी सुख-सुविधाओं से दूर सत्य के सम्मान को धारण करता है। (१)

राजा राम जपत को को न तरिओ ॥
उस सर्वशक्तिमान सार्वभौमिक चेतना का ध्यान करने से, कौन इस संसार-सागर से पार नहीं हुआ। यह कथन बताता है कि जब हमारा ध्यान सृष्टि की एकता पर केंद्रित होता है तब मन स्वाभाविक रूप से भय और बिखराव से ऊपर उठ जाता है।

गुर उपदेसि साध की संगति भगतु भगतु ता को नामु परिओ ॥१॥ रहाउ ॥
गुरु का उपदेश और संतों की संगति व्यक्ति को सबसे समर्पित भक्त-साधक का सम्मान दिलाती है। यह यात्रा ऐसे बदलाव का प्रतीक है जिसमें हमारी अंतरात्मा और व्यवहार हमें अज्ञानता से निकालकर जागरूकता की ओर ले जाते हैं। (१)(विराम)

संख चक्र माला तिलकु बिराजित देखि प्रतापु जमु डरिओ ॥
शंख मधुर और संतुलित अभिव्यक्ति का, चक्र आध्यात्मिक साहस का, माला अनुशासित जीवन का और तिलक एकत्व के प्रति समर्पण का प्रतीक है। इन गुणों की महिमा को देखकर नकारात्मक प्रवृत्तियाँ स्वयं भयभीत हो जाती हैं। यह उन सकारात्मक गुणों का प्रतीक है जो भीतरी नकारात्मक शक्तियों को भयभीत कर उन पर विजय प्राप्त करते हैं।

निरभउ भए राम बल गरजित जनम मरन संताप हिरिओ ॥२॥

निर्भयता को धारण करने से सार्वभौमिक सत्य की शक्ति प्रबल हो जाती है और जन्म-मरण का दुख मिट जाता है। यह उस आत्मविश्वास को दर्शाता है जो तब आता है जब मन अमर होने के सत्य को समझकर अज्ञात के भय पर विजय पा लेता है। (२)

अंबरीक कउ दीओ अभै पदु राजु भभीखन अधिक करिओ ॥

अंबरीक को निर्भयता का वरदान मिला, विभीषण को राज्य का सर्वोच्च अधिकार दिया गया। यह ऐतिहासिक संदर्भ उन आदर्शों का उदाहरण देता है जिन्होंने सच्चाई के स्वभाव से आंतरिक स्थिरता और शक्ति प्राप्त की।

नउ निधि ठाकुरि दई सुदामै ध्रूअ अटलु अजहू न टरिओ ॥३॥

सर्वव्यापी शक्ति ने सुदामा को नौ समृद्धियां दीं जबकि ध्रुव अचल हो गए और आज भी अडिग हैं। यह आध्यात्मिक जुड़ाव के दो परिणामों की ओर इशारा करता है, संतोष, जिससे आंतरिक समृद्धि मिलती है और अडिग नैतिकता जो परिस्थितियों से विचलित नहीं होती। (३)

भगत हेति मारिओ हरनाखसु नरसिंघ रूप होइ देह धरिओ ॥

आध्यात्मिक रूप से समर्पित सोच की रक्षा के लिए अहंकाररूपी हिरण्यकशिपु का नाश नरसिंह रूपी सर्वव्यापक चेतना ने किया। यह आंतरिक सत्य की रक्षा का प्रतीक है जब बाहरी या आंतरिक दमन सच्चाई और ईमानदारी पर हावी होने लगता है।

नामा कहै भगति बसि केसव अजहूँ बलि के दुआर खरो ॥४॥१॥

नामदेव कहते हैं कि सर्वव्यापी उपस्थिति का प्रतिनिधित्व करने वाले केशव, भक्ति से बंध जाते हैं, आज भी वह ईमानदारी के प्रतीक के रूप में राजा बलि के द्वार पर खड़े हैं। इसका अर्थ है कि सच्ची भक्ति दिव्यता को दूर नहीं मानती बल्कि, यह हमारी अंतरात्मा को उस सर्वव्यापी उपस्थिति का अनुभव करने का द्वार बना देती है। (४)(१)

तत्त्व: भक्त नामदेव गहन विरोधाभास को उजागर करते हैं, जहाँ मन निरंतर शक्ति, मुक्ति और मान्यता की तलाश में रहता है, वहीं वास्तविक स्वतंत्रता तब मिलती है जब वह इस निरंतर दौड़ को रोककर, चिंतनशील जागरूकता के ज़रिए एकत्व को अपनाता है। वह गहरे आंतरिक अनुभवों को समझाने के लिए पौराणिक प्रतीकों का प्रभावशाली प्रयोग करते हैं और ज़ोर देते हैं कि वह असीम और सर्वव्यापी स्रोत उन लोगों के लिए सुलभ हो जाता है जो अपना अहं छोड़ने को तैयार होते हैं। समर्पण का यह कार्य एक डरपोक अंतरात्मा को मज़बूत जागरूकता में बदल देता है जो सशक्त होती है और किसी भी नकारात्मकता का सामना करने में सक्षम होती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com